SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक विचारों का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में योगदान

रीतु सुन्डी, शोध छात्रा, **मुकेश कुमार**, पीएच–डी, शैक्षिक अध्ययन विभाग
महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी, बिहार, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Authors
रीतु सुन्डी, शोध छात्रा
मुकेश कुमार, पीएच–डी
E-mail : reetusundi@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 05/02/2026
Revised on : 08/04/2026
Accepted on : 17/04/2026
Overall Similarity : 00% on 09/04/2026

Plagiarism Checker X - Report
Originality Assessment
0%
Overall Similarity

Date: Apr 9, 2026 (07:04 AM)
Matches: 0 / 3023 words
Sources: 0

Remarks: No similarity found, your document looks healthy.

Verify Report: Scan this QR Code

शोध सार

अंग्रेजों के शिक्षा–प्रणाली के विरुद्ध राष्ट्रीय शिक्षा–प्रणाली के समर्थक में स्वामी विवेकानन्द का नाम प्रमुख है। ज्ञान क्या है, इसमें प्राचीन भारतीय और आधुनिक पाश्चात्य मत में स्पष्ट विभिन्नता प्रतीत होता है, किन्तु मनुष्य को आत्मज्ञान की प्राप्ति तभी होती है जब उसे भौतिक और आध्यात्मिक ज्ञान हो। प्राचीन भारतीय शिक्षा के अनुसार ज्ञान व्यक्ति के भीतर उत्पन्न होता है, बाह्य वातावरण के प्रभाव से नहीं। ज्ञान का स्रोत हमारे भीतर है तो व्यक्ति शिक्षा स्वयं से भी प्राप्त किया जा सकता है। विवेकानन्द के अनुसार "जिस तरह आप एक पौधा नहीं उगा सकते, उसी तरह आप किसी बालक को शिक्षा नहीं दे सकते।" शिक्षक का कार्य बालक के मार्ग में आने वाली बाधाओं को समाप्त करने में सहयोग करना है। बालक को उन्मुक्त रखना चाहिए, अनावश्यक माता–पिता या शिक्षक को दबाव नहीं देना चाहिए। सामर्थ्य के अनुसार बालक को विकसित होने का उचित अवसर देना चाहिए। वेदांत दर्शन के सार्वभौमिक सिद्धांत और मानवतावादी शिक्षा वर्तमान परिदृश्य में भी प्रासंगिक और लाभदायक है। नैतिक एवं धार्मिक शिक्षा के अभाव के कारण ही युवक–युवतियों का चरित्र पतन हो रहा है इसलिए जन–स्त्री, व्यावसायिक, धार्मिक और राष्ट्रीय शिक्षा के क्षेत्र में उचित मार्ग प्रशस्त करने को प्राथमिकता दिये जाने की आवश्यकता है। वर्तमान परिस्थितियों के लिए भी स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक–विचार, शिक्षा व्यवस्था में सुधार के लिए दिशा–निर्देश उचित हैं। स्वामी विवेकानन्द दार्शनिक, आध्यात्मिक गुरु, शिक्षा–शास्त्री, समाज–सेवी और दूरदृष्टि की प्रवृति रखते थे, उनका दर्शन समग्र विकास पर केंद्रित था। स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक विचारों का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भी विद्यार्थियों के विकास में अहम् भूमिका है।

मुख्य शब्द

स्वामी विवेकानन्द, शिक्षक, राष्ट्रीय शिक्षा–प्रणाली, समाज.

परिचय

शिक्षा आत्म–विकास की एक निरंतर प्रक्रिया है। स्वामी विवेकानन्द को प्राचीन भारतीय संस्कृति के प्रति गहरी आस्था

थी। जीवन–दर्शन के समतुल्य शिक्षा–दर्शन में भी समन्वयवादी दृष्टिकोण का प्रतिबिंब प्रतीत होता है। वर्तमान परिस्थितियों के लिए भी स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक–विचार, शिक्षा व्यवस्था में सुधार के लिए दिशा–निर्देश देते है। शैक्षिक विचार एवं जीवन–दर्शन देश के अतीत तथा वर्तमान के मध्य संयोजक स्वरुप थे। आधुनिक युग के दार्शनिक, विचारक, लेखक ,आध्यात्मिक गुरु, शिक्षा–शास्त्री और समाज–सेवी थे। बाल्यावस्था से ही आध्यात्म में रूचि लेते थे। प्रारंभ में रामकृष्ण परमहंस के विचारों की अवहेलना करते थे, किन्तु समय के साथ विचारों से प्रभावित होकर परम शिष्य बन गए। रामकृष्ण मिशन की स्थापना 1 मई, 1897 को स्वामी विवेकानन्द ने किया, बेलूर मठ, रामकृष्ण मिशन और रामकृष्ण मठ का मुख्यालय है। बेलूर मठ की भवनों में हिन्दू, इसाई तथा इस्लाम धर्म का प्रतिबिम्ब मिश्रित है, जो धर्मों की एकता को व्यक्त करता है। संन्यास ग्रहण करने के पूर्व स्वामी विवेकानन्द का नाम नरेन्द्र था। गुरु के विचारों और स्वयं के अनुभव से शिक्षा जगत को ओजस्व रूप दिया।

शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक विचारों का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अध्ययन करना है। स्वामी विवेकानन्द के सिद्धांत, भाव–विचार एवं कार्य–शैली ने अधिकतर विद्यार्थियों को प्रेरित एवं प्रभावित किया। 11 सितम्बर, 1893 को अमेरिका के शिकागो शहर में आयोजित विश्व धर्म सभा में 'अमेरिका के भाईयों और बहनों .....' शब्दों के भाषण ने पूरी दुनिया के लोगों को जीत लिया था। यह दिन "विश्व भाईचारा दिवस" के रूप में मनाया जाता है। एतिहासिक भाषण के कारण ही भारत को विश्व गुरु की संज्ञा से सुशोभित किया गया। द सबटल बॉडीः द स्लो ऑफ योगा इन अमेरिका (ऑथर–स्टेफनी स्यमन). द बेस्टेर्न ईवनिंग ट्रांसक्रिप्ट. अमेरिकी अखबार "कोलंबस हॉल में बैठे हुए 4000 लोग इसलिए 2 घंटो से दूसरों का भाषण सुन रहें थे क्योंकि उनको स्वामी विवेकानन्द के 15 मिनट के भाषण का इंतेजार था।" स्वामी विवेकानन्द का जन्म 12 जनवरी 1863 और 4 जुलाई 1902 को मृत्यु हुआ। भारत में 12 जनवरी को राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाया जाता है। हिंदू धर्म ग्रंथों वेदों, उपनिषदों, रामायण, पुराणों, भगवत् गीता और महाभारत में रूचि लेते थे। बाल्यावस्था से ही आध्यात्म शिक्षा के प्रति समर्पित भाव रखते थे। स्वामी विवेकानन्द वैदिक सनातन धर्म (हिन्दू धर्म) का प्रचार–प्रसार करते थे। उनका जीवन–दर्शन वेदांत उपनिषद पर आश्रित था इसलिए शारीरिक, मानसिक सहनशक्ति और वाक्पटुता के लिए ब्रह्मचर्य का समर्थन किये। वेदांत का दरवाजा सभी के लिए खुला है – लड़का–लड़की, रंग–भेद या जात–पात कोई कारक नहीं है। मनुष्य जीवन का अंतिम उद्देश्य आत्मानुभूति, ईश्वर तथा मोक्ष की प्राप्ति को मानते है। आत्मानुभूति के लिए ज्ञान, कर्म और भक्ति योग की आवश्यकता है, इसलिए योग को प्राथमिकता देते थे। संस्कृत भाषा का समर्थन करते थे, क्योंकि यह प्राचीन और भारतीय संस्कृति की भाषा है। ईश्वर सर्वशक्तिमान, निराकार और एक है। स्वामी विवेकानन्द "हमें उस शिक्षा की आवश्यकता है जिसके द्वारा चरित्र का निर्माण होता है, मस्तिष्क की शक्ति बढ़ती है, बुद्धि का विकास होता है और मनुष्य अपने पैरो पर खड़ा हो सकता है, क्यूँकि मनुष्य की अन्तनिर्हित पूर्णता की अभिव्यक्ति है।"

विवेकानन्द के अनुसार "शिक्षा का अर्थ मनुष्यों में निहित शक्तियों का पूर्ण विकास है, न कि मात्र सूचनाओं का संग्रह।" मनुष्य शब्द मानवीय गुणों का सूचक है जैसे साहस, निर्भय, सहयोग, सहानुभूति और दया इत्यादि। प्रचलित शिक्षा की आलोचना करते हुए स्वामी विवेकानन्द ने कहा कि जो शिक्षा जन–साधारण को जीवन–संघर्ष के लिए तैयार, चरित्र निर्माण, समाज–सेवा की भावना विकसित नहीं करती तो ऐसी शिक्षा से क्या फायदा है। रटकर डिग्री प्राप्त करना अनुचित शिक्षा है, जिससे व्यक्ति का गलत मार्ग की ओर जाने की संभावना बढ़ जाती है। धार्मिक और सामाजिक कुरीतियों को समाप्त करने के लिए शिक्षा को जरिया बनाया।

भारतीय शिक्षा की अवधारणा के अनुसार भारत कभी विश्व गुरु हुआ करता था, किन्तु वर्तमान में स्थिति इसके विपरीत है। प्राचीनकाल में पूरे विश्व से लोग शिक्षा प्राप्त करने के लिए भारत आया करते थे, किन्तु आज सर्वत्र भ्रष्टाचार, कुरीतियां और लालच बिखरा हुआ है। इन समस्यायों का समाधान भी विवेकानन्द जी ने पूर्व में ही बतलाया है। विवेकानन्द जी की शिक्षा किसी भी धर्म का विरोध नहीं करती है बल्कि यह पौराणिक पुस्तकों से निचोड़ा गया ज्ञान है। व्यक्ति को धर्म का ज्ञान अवश्य होना चाहिए। शिक्षा एक निरन्तर प्रक्रिया है, जिसे व्यक्ति जीवन के अंतिम पड़ाव तक सीखता रहता है। कोई भी किसी को कुछ नहीं सिखा सकता है, कोई किसी को आध्यात्मिक भी नहीं बना सकता है बल्कि व्यक्ति स्वयं में निहित अंतरात्मा (आंतरिक शिक्षक) से सीखता है। इसलिए शिक्षा में आध्यात्मिकता अधिक था। शिक्षक केवल सुझाव एवं मार्ग प्रशस्त करते है। बच्चें को क्या करना है, क्या नहीं करना है, ये नहीं सीखाना चाहिए, बल्कि बच्चें को स्वतंत्र तरीके से खुद करने देना चाहिए। वास्तविक अनुभव को भी शिक्षा मानते है। विवेकानन्द "ज्ञान स्वयं में विधमान है, मनुष्य केवल उसका आविष्कार करता है। जो ज्ञान हमें पुस्तकों से प्राप्त नहीं होता वास्तविक अनुभव के माध्यम से प्राप्त होता है, जिससे नये विचार, तरीका और आधार बनते है। जो मनुष्य सीखना नहीं चाहता है, वह मृत्यु के रास्ते में है। प्रचलित शिक्षा व्यवस्था से संतुष्ट नहीं थे, आमूल परिवर्त्तन चाहते थे। मैकॉले की अंग्रेजी शिक्षा के समर्थक नहीं थे। सभी को शिक्षित करने के पक्ष में थे, बिना किसी जाति, रंग, लिंग और शारीरिक

क्षमता के। शिक्षा का न होना अज्ञानता का मुख्य कारण है, गरीबी, समाजिक कुरीतियों और अन्धविश्वास को समाप्त करना है। जिस शिक्षा में धार्मिक पक्ष न हो, उस शिक्षा से आध्यात्मिक उद्देश्यों की प्राप्ति असंभव है। धार्मिक शिक्षा किताबों से नहीं बल्कि व्यवहार, आचरण और संस्कार के द्वारा देना चाहिए। मनुष्य को लौकिक और परलौकिक दोनों जीवन के लिए तैयार रहना चाहिए।

स्वामी विवेकानन्द "मनुष्य का निर्माण केवल जानकारियों से नहीं हो सकता है। हमें तो भावों और विचारों को ऐसा आत्मसात कर लेना चाहिए, जिससे जीवन–निर्माण हो, मनुष्य का निर्माण और चरित्र गठन हो।

शिक्षा संबंधी सिद्धांत

नैतिकता, चारित्रिकता, आध्यात्मिकता, शारीरिक, मानसिक, व्यावसायिक और विश्व–बंधुत्व की भावना से है।

स्वामी विवेकानन्द द्वारा निर्धारित प्रमुख आयाम शिक्षा परिप्रेक्ष्य में:

अनुशासन: अनुशासन का अर्थ आत्मा द्वारा निर्दिष्ट से है। जब तक मनुष्य स्वयं की आत्म अनुभूति नहीं करता, तब तक निर्दिष्ट होना असंभव है। स्कूल अनुशासन से तात्पर्य शिक्षक और छात्र स्वयं को नियंत्रित करना, सामाजिक नियम और आदर्शों के अनुकूल आचरण करना ही उत्तम अनुशासन है।

पाठ्यक्रम: पाठ्यक्रम शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति का साधन है इसलिए उचित पाठ्यक्रम का होना अति आवश्यक है। विश्व का असीम पुस्तकालय व्यक्ति के मानस में स्थित है, जिसका प्रयोग व्यक्ति को अपने व्यावहारिक जीवन में करना चाहिए। शिक्षा देश–विदेश, जहां से भी मिले ग्रहण और पाठ्यक्रम में स्थान देना चाहिए।

शैक्षिक उद्देश्य: बालकों में आत्म–विश्वास की भावना को जागृत करना, श्रद्धा की भावना उत्पन्न करना, जीवन के व्यावहारिक पक्ष के प्रति जागरूकता, आत्म–निर्भरता और भाई –चारे को प्रोत्सहन, पुस्तकीय ज्ञान का सीमित महत्व, पूर्णता की चेतना तथा त्याग की भावना से है। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बालक का सैद्धांतिक पक्ष का ही विकास नहीं करना बल्कि व्यक्तित्व के समस्त पक्षों का विकास कर पूर्ण मानव बनाना है। स्वामी विवेकानन्द की शिक्षा को मानव–निर्मात्री शिक्षा कहा जाता है। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य आत्म–सिद्धि है।

वेदान्त दर्शन: वेदान्त दर्शन के अनुसार व्यक्ति में ईश्वर का अंश विद्यमान है, जो छिपा हुआ है। अपने अंदर छिपे हुए आध्यात्मिक पूर्णता को प्राप्त करना ही शिक्षा का मूल प्रयोजन है। शिक्षा–दर्शन को वेदांत के अद्वैत दर्शन से समन्वय कर शिक्षा को नया रूप दियज्ञं वेदांत का मुख्य सिद्दान्त है कि एक ही ब्रह्मा सर्वत्र व्याप्त है। इसी आधार से रामकृष्ण परमहंस सभी धर्मों की एकता पर बल दिये। स्वामी विवेकानन्द के शिक्षा सम्बन्धी विचारों में भी वेदांत–दर्शन का प्रभाव है। विवेकानन्द के अनुसार आदि शंकराचार्य के अद्वेत वेदांत दर्शन में हिन्दू धर्म का सार उचित है। वेदांत विवेकानन्द के अनुसार "प्रत्येक आत्मा संभावित रूप से दिव्य है। प्रकृति, बाहरी और आंतरिक को नियंत्रित करके इस दिव्यता को भीतर प्रकट करना लक्ष्य है। इसे काम या पूजा, या मानसिक अनुशासन, या दर्शन–एक या अधिक या इन सभी के द्वारा करें और मुक्त हो जाएं। यह सम्पूर्ण धर्म है या सिद्धांत या हठधर्मिता या अनुष्ठान या किताबें या मंदिर या रूप, लेकिन गौण विवरण है। नव–वेदांत के मुख्य प्रतिनिधियों में से एक थे।

योग: नियंत्रित मन हमें नकारात्मकता से सुरक्षित रखता है, जबकि अनियंत्रित मन हमें नकारात्मकता की ओर ले जाता है। मन को नियंत्रित रखने के लिए उत्तम विचारों की बार–बार साधना करना चाहिए। एकाग्रता में अंतर के कारण ही एक व्यक्ति दुसरे व्यक्ति से अलग होता है। विवेकानन्द "पढ़ने के लिए जरुरी है एकाग्रता, एकाग्रता के लिए जरुरी है ध्यान, ध्यान से ही इन्द्रियों पर संयम रखकर एकाग्रता प्राप्त कर सकते है।

स्त्री–शिक्षा: स्वामी विवेकानन्द स्त्री–शिक्षा के समर्थक थे। स्त्रियों को शिक्षित करने के लिए विशेष बल दिये। स्वामी विवेकानन्द के अनुसार स्त्रियों को शिक्षित करना अति आवश्यक है, बिना शिक्षा के नारी–उत्थान असंभव हैं। स्त्रियों को शिक्षित होने के पश्चात् वे तुम्हें बतायेंगी की कहां और किस प्रकार सुधार करने की आवश्यकता है।

शारीरिक शिक्षा: सबसे पहले युवकों को सबल होना चाहिए। शिक्षा में शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक के समन्वय को आदर्श रूप दिये। युवाओं के लिए संदेश "उठो जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए।" युवाओं को शराब और धूम्रपान सेवन करने की निंदा करते थे। शारीरिक विकास के लिए खेल–कूद, व्यायाम और यौगिक क्रियाओं को पाठ्यक्रम में शामिल करना होगा। विवेकानन्द ने "नवयुवकों के लिए गीता पढ़ने से भी अधिक फुटबाल खेलना जरुरी माना है, शरीर में शक्ति रहने से ही व्यक्ति आध्यात्मिकता को समझ और आगे बढ़ सकता है।

मानसिक एवं बौद्विक विकास: देश के पिछड़ेपन का सबसे प्रमुख कारण मानसिक एवं बौद्विक विकास है। इसके लिए

उचित ज्ञान–विज्ञान, कौशल और व्यावहारिक शिक्षा की आवश्यकता है। गणित, इतिहास, कला, भूगोल, राजनीतिशास्त्र, विज्ञान, अर्थशास्त्र और संगीत विषयों के द्वारा मानसिक एवं बौद्विक विकास होगा। चित्रकला, संगीत, नृत्य और अभिनय को भी पाठ्यक्रम में विशेष महत्व देने के समर्थन में थे।

समाज सेवा: शब्दों के ज्ञान के साथ–साथ मनुष्य को शिक्षित भी होना चाहिए। पढ़े–लिखे और धन–सम्पन्न लोगों को गरीब और असहायों की मदद करनी चाहिए। उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रेरित एवं प्रोत्साहित करना चाहिए ताकि समाज में सभी एक समान जीवन जी सकें। स्वयं जीवन का एक–एक पल जन–सेवा में व्यतीत करते थे, ऐसा करने के लिए अन्य लोगों को भी प्रेरित करते थे। मानव–सेवा को ईश्वर की सेवा मानते थे।

देश–प्रेम: हमारे देश के पतन का मुख्य कारण यह है कि हम अपने देश को प्रेम करना भूल गए है। विद्यार्थियों में अपने देश और संस्कृति के प्रति प्रेम अति आवश्यक है। देश–प्रेम के अतिरिक्त अन्तराष्ट्रीय सद्दभावना की आवश्यकता को भी विशेष महत्वपूर्ण बताया। किसी भी देश का उज्जवल भविष्य वहां रहने वाले लोगों और मानव–विकास शिक्षा पर निर्भर करता है। तात्कालिक परिस्थिति के आधार पर स्वामी विवेकानन्द ने कहा की युवाओं को अपने देश का इतिहास स्वयं लिखना चाहिए। ब्रिटिश सरकार ने हमारे इतिहास की व्याख्या अपनी आवश्यकता और सुविधानुसार किया है। देश के प्रति अपने कर्तव्यों को निभाना और उससे प्रेम करना ही सच्चा देश–प्रेम है। सिद्धन्तों के वृहदता ने देश को पतन की ओर ले गए है। परतंत्रता के समय शिक्षा की ऐसी व्यवस्था पर जोर दिए जिससे देशवासियों में राष्ट्रीय चेतना जागृत हो सकें।

नैतिक और चारित्रिक विकास: चरित्र ही मनुष्य को कर्त्तव्यनिष्ठ और सत्यवान बनाता है। अच्छे नैतिक और चरित्र से स्वयं मनुष्य का समाज और राष्ट्र का विकास निश्चित है। आध्यात्मिक विकास के लिए साहित्य, नीति, धर्म और दर्शन के अतिरक्ति ध्यान, भजन, कीर्तन और सत्संग क्रियाओं को प्राथमिकता देते थे। संसार के समस्त महापुरुषों और संतों की जीवनी और प्रेरक गतिविधियों का अध्ययन करना चाहिए।

व्यावसायिक विकास: स्वामी विवेकानन्द ने देश की गरीबी को नजदीक से देखा है। जीवन के उतार–चढ़ाव को स्वयं विवेकानन्द ने भी महसूस किया है। आलस्य, अहंकार, इर्ष्या और प्रतिस्पर्धा की भावना ने एक–दुसरे के प्रति संवेगात्म्क भाव को समाप्त कर दिया है इसलिए जितना हो सके सभी व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर सकें। व्यावसायिक शिक्षा के लिए भौतिक, कृषि, तकनीकी और उद्योग कौशल की शिक्षा पर बल देते थे।

वैज्ञानिक शिक्षा: भारतीय विद्यार्थी पाश्चात्य (देश–विदेश) ज्ञान को सीखे किन्तु सांस्कृतिक चेतना से भारतीय रहें। क्रिया और रचनात्मक शिक्षा के पक्ष में थे।

देश एवं समाज के उत्थान एवं प्रगति के लिए स्कूली शिक्षा में उचित पाठ्यक्रम, शैक्षिक उद्देश्य, मानसिक एवं बौद्विक विकास, अनुशासन, समाज–सेवा, वेदान्त दर्शन, योग, शारीरिक शिक्षा, स्त्री–शिक्षा, देश–प्रेम, नैतिक और चारित्रिक विकास, व्यावसायिक विकास और वैज्ञानिक शिक्षा आधारित होना चाहिए। स्वामी विवेकानन्द के विचारों की तुलना वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में बहुत कम मिलता है। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था तकनीकीकरण से आच्छादित है, जिसका सकरात्मक और नकरात्मक परिणाम प्रतिदिन समाचार–पत्र, सोशल–मीडिया, थाना तथा न्यायालय में प्रदर्शित होता रहता है।

निष्कर्ष

रोमन रोलैंड के अनुसार " स्वामीजी की शिक्षा दो शब्दों में निहित है – संतुलन और विश्लेषण। वे सम्पूर्ण मानव–शक्ति के साकार रूप थे। इनका शिक्षा–दर्शन संतुलन और विश्लेषण से ओत–प्रोत है।" स्वामी विवेकानन्द के जीवन–दर्शन के समान, शिक्षा–दर्शन में भी हमें समन्यवयवादी दृष्टिकोण की तस्वीर मिलती है। शैक्षिक विचार के द्वारा पूर्व और पश्चिम का समन्वय, आध्यात्मिक और भौतिकवाद का समन्वय, व्यक्तिकता और समाजवाद का समन्वय, राष्ट्रीयता और अन्तर्राष्ट्रीय समन्वय कर शिक्षा को मानव विकास के लिए सशक्त बनाया। स्वामीजी के शिक्षा–दर्शन से प्रभावित होकर जवाहरलाल नेहरु "भारत के अतीत में अटल आस्था रहते हुए और भारत की विरासत पर गर्व करते हुए भी, विवेकानन्द का जीवन की समस्याओं के प्रति आधुनिक दृष्टिकोण था और वे भारत के अतीत तथा वर्तमान के बीच एक प्रकार के संयोजक थे।

अरबिंदो ने विवेकानन्द को आध्यात्मिक रूप से भारत को जगाने वाले के रूप में माना है। भारतीय शिक्षा स्वामी विवेकानन्द के ऋणी है। बहुत से शिक्षा केन्द्र रामकृष्ण मिशन के द्वारा संचालित, स्वामी विवेकानन्द के शिक्षा संबंधी विचारों का समर्थन करते हैं। जीवन में आगे बढ़ने के लिए निर्भय होकर संघर्ष करना चाहिए, जब तक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफल और आत्मनिर्भर नहीं हो जाते, तब तक प्रत्येक क्षेत्र में विकसित होने के लिए हमें अन्य लोगों या देशों में निर्भर होना होगा।

यह बिना शिक्षा और जागरूकता के असंभव है। शिक्षा को मात्र ज्ञान प्राप्त करने का माध्यम न समझकर, प्रत्येक व्यक्ति को चरित्र–निर्माण और समाज सेवा का मार्ग समझना चाहिए जिससे व्यक्ति का व्यावहारिक, नैतिक, अध्यात्मिक, कौशल और स्वतंत्र सोच को प्राथमिकता मिल सकें। अतः मानव तभी पूर्णता प्राप्त कर सकता है जब शरीर स्वस्थ हो। विवेकानन्द के द्वारा कहा गया प्रत्येक शब्द आज के युवाओं को प्रेरित और ऊर्जावान करती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, में भी सर्वांगीण विकास, अनुभवात्म्क शिक्षा, कौशल आधारित व्यावसायिक शिक्षा, मूल्य शिक्षा और नवाचार आधारित तकनीकीयुक्त शिक्षा को प्राथमिकता दिया गया।

संदर्भ सूची

1. कपूर, कारबानू (2024) *स्वामी विवेकानन्द का साहित्यक व्यक्तित्व,* प्रलेख प्रकाशन, उत्तर प्रदेश।
2. अरोड़ा,दक्षता (2019) स्वामी विवेकानंदः ए पर्सनालिटी डेवलपमेंट मेंटर. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ हुमिनितिएस एंड एजुकेशनल रिसर्च,* 9(2), 338–342।
3. बिस्वास,संतु (2018) थॉट्स एंड आइडियाज ऑफ स्वामी विवेकानन्द ऑन एजुकेशनः ए ब्रीफ स्टडी. *जर्नल ऑफ इमर्जिंग टेक्नोलॉजीज एंड इनोवेटिव रिसर्च.* 5(8), 16–20।
4. कुमार, दीपक एंड सरकार, चिरंजीत (2019) स्वामी विवेकानन्द'स स्पिरिचुअल थॉट एंड करंट प्रॉब्लम ऑफ एजुकेशन. *यूरोपियन जर्नल ऑफ बिजनेस एंड सोशल साइंस.* 7(2), 657–670।
5. राधा, आर. (2019) स्वामी विवेकानन्द'स मिशन ऑन मेन मेकिंग एजुकेशन. *जर्नल ऑफ इमर्जिंग टेक्नोलॉजीज एंड इन्नोवेटिव रिसर्च,* 6(6), 111–114।
6. श्रीवास्तव, प्रेम शंकर (2015) विवेकानन्द के दर्शन में अध्यात्मिक शिक्षा. *सामाजिक विज्ञान में अनुसंधान की अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिका,*वॉल्यूम 5(1), 826–836।
7. संथी, एस. (2019) स्वामी विवेकानन्द'स पर्सपेक्टिव इन एजुकेशन. *जर्नल ऑफ इमर्जिंग टेक्नोलॉजीज एंड इनोवेटिव रिसर्च,* 6(5) 598–602।
8. सतुआ, चिरंजीत (2020) द एजुकेटिव वैल्यू ऑफ स्वामी विवेकानन्द'स उत्तेरांसः अरिसे, अवेक एंड स्टॉप नोट टिल द गोल इस रिचड. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स,* 8(9), 3723–3731।
9. https://www.quora.com/What-is-the-core-philosophy-of-Swami-Vivekananda, Accessed on 03/02/2026.
10. https://www.quora.com/What-are-the-qualites-of-Swami-Vivekananda, Accessed on 01/02/2026.
11. https://www.youtube.com/watch?v=3oaMjZT847U, Accessed on 29/01/2026.
12. https://en.wikipedia.org/wiki/Swami_Vivekananda, Accessed on 02/02/2026.
13. https://www.youtube.com/watch?v=a-l3gccq1-I, Accessed on 01/02/2026.
14. https://www.youtube.com/watch?v=CG00fOvIEds, Accessed on 04/02/2026.
15. https://www.youtube.com/watch?v=adDRhEwjr5c, Accessed on 30/01/2026.

****